सत्यमेव जयते

కోయ బాసాతె నేర్వనద్

కోయ భాషాబోధిని

कोया भाषा प्रवेशिका

KOYA PRIMER

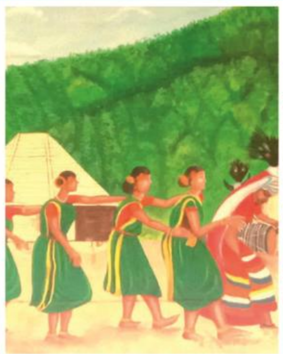

CIIL-NCERT Primer Series

ई–पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई–सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य–सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई–पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई–सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई–सामग्री प्राप्त करें।

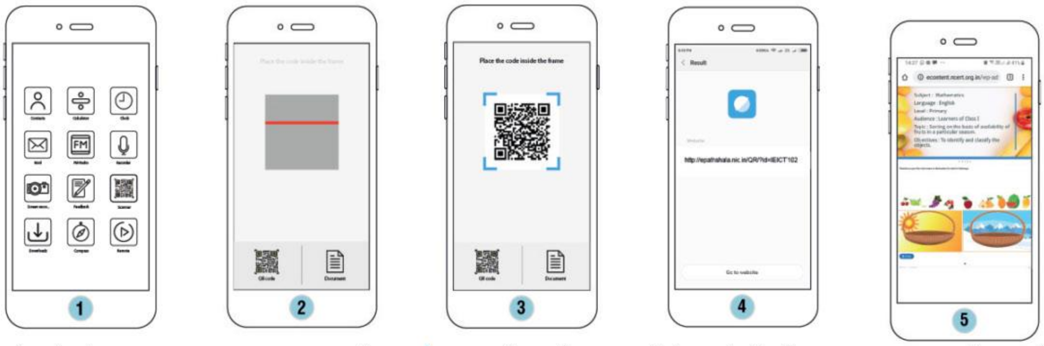

1. प्ले स्टोर से ई–पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें
2. क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें
3. स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें
4. लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें
5. उपलब्ध ई–सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई–पाठशाला द्वारा ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई–सामग्री प्राप्त करें।

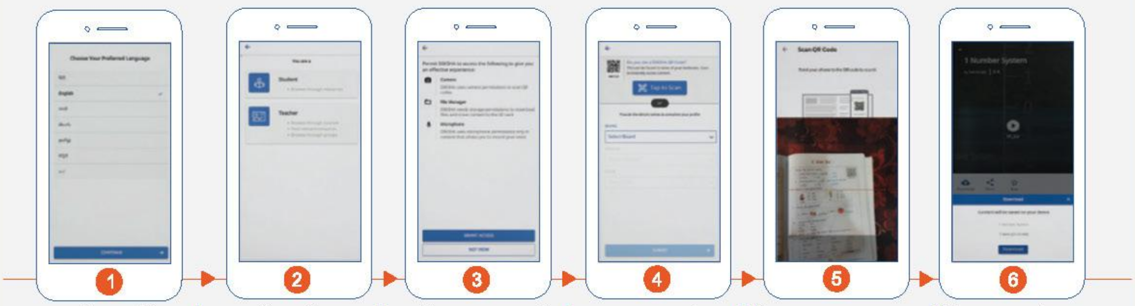

1. अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें
2. अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी
3. पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें
4. क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें
5. कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें
6. क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई–सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

కోయ బాసాతె నేర్పనద్

కోయ భాషాబోధిని

कोया भाषा प्रवेशिका

KOYA PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

కోయ బాసాతె నేర్పసద్
కోయ భాషాబోధిని
कोया भाषा प्रवेशिका
KOYA PRIMER

A basal reader of Koya alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
L. R. Prem Kumar
Dupukuntla Rameshbhushan

ISBN: 978-81-19411-65-8

First Edition: March 9, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Nandakumar L
Cover Photo: Koya Language Resource Persons

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के मार्ग का प्रमुख अवयव भारतीय भाषाएँ हैं, जिनसे ज्ञान-विज्ञान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच देश के समस्त बच्चों तक सुनिश्चित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफ़ारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसीलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा/ओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

स्वच्छ भारत

कौशल भारत, कुशल भारत

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को '*बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति*' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मज़बूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमरों) का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये पुस्तिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों, जैसे- बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

मार्च, 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका/Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है, जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्याधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अधययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilized efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognizing, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarizes children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

భారతదేశం యుగయుగాలుగా వివిధ ప్రాంతాల్లో మాట్లాడే అనేక భాషలుగలిగిన బహుభాషా దేశంగా ఉంది. మౌఖిక సంభాషణల్లో బహుభాషలను ఉపయోగించడం అనేది మన దేశ ప్రజల సాధారణ లక్షణం. అది మనల్ని కలుపుతూ కలిసికట్టుగా ఉండేటట్లుచేసి ఐకమత్యాన్ని పెంపొందిస్తుంది. భారతదేశ బహుభాషా స్వభావం ఒక బ్రహ్మాండమైన సంపద అనే ఆలోచనను జాతీయ విద్యా విధానం (ఎన్ఇపి-2020) గట్టిగా నొక్కి చెప్పింది. దేశ సామాజిక-సాంస్కృతిక, ఆర్థిక, విద్యా అభివృద్ధికి దీనిని సమర్ధవంతంగా ఉపయోగించుకోవాల్సిన అవసరం ఉందనీ బహుభాషావాదాన్ని విద్యలో ప్రతి స్థాయిలో ప్రోత్సహించాలని ఇది సిఫార్సు చేస్తుంది. తద్వారా అభ్యాసకులు వారి స్వంత భాష(ల)లో చదువుకునే అవకాశాన్ని పొందుతారు. అన్ని భారతీయ భాషలలో బోధన-అభ్యసన సామాగ్రిని సృష్టించడం, ఆ

విధంగా బహుభాషా సంపదను పెంచి, 'విక్షిత్ భారత్'కి ఒక మెరుగైన సహకారాన్ని అందించడానికి వీలు కల్పిస్తుంది. ఎన్.ఇ.పి-2020కి అనుగుణమైన ప్రారంభ - శ్రేణి ప్రథమ వాచకాలను అభివృద్ధి చేయడం, భారతదేశంలోని ప్రతి ప్రాంత ప్రత్యేక భాషా సాంస్కృతిక లక్షణాలను సంబోధించే ఒక సమగ్ర, అంతర్గ్రాహ్య విధానం వాటికి అవసరం. ఈ ప్రథమ వాచకాలు చదవడం, రాయడంలో భాషా ప్రావీణ్యాన్ని అందించడమే కాకుండా ప్రారంభ దశ అభ్యాసకులలో సృజనాత్మకతను, విమర్శనాత్మక ఆలోచనను పెంపొందించడాన్ని లక్ష్యంగా పెట్టుకున్నాయి. ఒక భాషా చిహ్నాలను, వర్ణమాల అక్షరాలను ఉచ్చరించటానికి, గుర్తించడానికి, గ్రహించటానికి ఇది ఎంతో కీలకం. పదాది, పదమధ్యమం, పదాంత స్థానాల్లోని ఈ అక్షరాల వంటి వాటి కలయికల ద్వారా రూపొందించబడిన ఒకటి లేదా అంతకంటే ఎక్కువ జతల అక్షరాల అర్థాన్ని కూడా పిల్లలకు పరిచయం చేస్తుంది. అంతేకాకుండా, ఇది తరువాత పరిచయం చేయబోయే అక్షరాలు రాసే అభ్యాసాన్ని సులభతరం చేసే ఉదాహరణలను అందిస్తుంది; ప్రాసగేయాలు అభ్యాసకులకు వారి భాషాభివృద్ధికీ అభిజ్ఞ నైపుణ్యాలకు సహాయపడతాయి.

मार्च, 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Koya Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology, NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Member Coordinators

L. R. Prem Kumar, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru
Dupukuntla Rameshbhushan, Junior Resource Person, SPPEL, CIIL, Mysuru

Resource Persons

Peesodi Kannaiah, Lfl. Head Master, Govt. Primary Model School, Pedanallaballi (V), China Nallaballi (Post), Dummugudem (Man), Bhadradri Kothagudem Dist, Telangana
Payam Venkataratnam, SCRP, AGHS. K. Regupally Complex-1, Dummugudem Mandal, Bhadradri Kothagudem District, Telanagana
Karam Narayanarao Dora, SGT, G. P. School (T.W), Tutigunta, Polavaram Mandal, I.T.D.A. Kotaramachandrapuram, Eluru District, Andhra Pradesh
Komaram Sitaramaraju, School Assistant (English), G.T.W.A.H. School, Badnaikavalasa, Pachipenta Mandal, Parvathipuram Manyam District, Andhra Pradesh

Telugu Reviewer

Prattipati Matthew, Chief Resource Person (Academic), National Translation Mission, CIIL, Mysuru

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru
Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
R. Nagamani, Data Input Operator, BVP, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

భాషాబోధన పుస్తకాన్ని ఎలా బోధించాలి?

జాతీయ నూతన విద్యా విధానం-2020, జాతీయ పాఠ్యప్రణాళిక చట్రం-2022ల ప్రకారం, మూడు నుండి ఎనిమిది సంవత్సరాల వయస్సుగల పిల్లలకు వారి మాతృభాష, ఇంటి భాష, స్థానిక భాష, ప్రాంతీయ భాషలలో విద్యను అందించడానికి ఏర్పాట్లు చేయడం జరిగింది. భారతదేశంలోని గిరిజనుల ప్రాబల్యం ఉన్న ప్రాంతాల్లోని పిల్లలు తరగతి గది విద్యా విధానాన్ని అర్థం చేసుకోలేరు. ఇది పాఠశాల విద్యావ్యవస్థపైన ఎంతో ప్రభావం చూపుతుంది. అందుకే 3 నుండి 5 సంవత్సరాల పిల్లలకు కిండర్ గార్టెన్, I-II తరగతి పిల్లలకు ప్రాథమిక స్థాయిలో ప్రాథమిక అక్షరాస్యతను అందించడానికి కేంద్ర ప్రభుత్వం ఏర్పాట్లు చేసింది. ఇందులో స్థానిక పాటలు, కథల ద్వారా పిల్లల నిరాశక్తతను తొలగించడం, తద్వారా వారి మౌఖిక భాషను అభివృద్ధి చేయడంపై దృష్టి పెట్టింది. పుస్తకంలోని కథ, చిత్రాలు, సంభాషణల ద్వారా ఈ పని జరుగుతుంది. దీనితోపాటుగా భాషాబోధన పుస్తకం పిల్లలకు ధ్వని పరిచయం, అక్షర పరిచయం, చదవడం, రాయడం వంటివాటి సాధన కోసం కూడా ఉపయోగించటం జరుగుతుంది.

ఆంధ్రప్రదేశ్ లో 5.3, తెలంగాణలో 9.3 శాతం మంది గిరిజనులు ఉన్నారు. కోయ భాష మాట్లాడే కోయలు ఈ రెండు రాష్ట్రాలలోని ఉమ్మడి జిల్లాలైన ఖమ్మం, వరంగల్లు, పశ్చిమగోదావరి, తూర్పుగోదావరి జిల్లాల్లో నివాసం ఉంటున్నారు. మరికొంత శాతం ఆదిలాబాదు, కరీంనగరు జిల్లాల్లోనూ ఉన్నారు. వారి ఆవాసాలు ఎక్కువగా అడవులు, పర్వత ప్రాంతాల్లో ఉన్నాయి. కిండర్ గార్టెన్ స్థాయి నుండి 3వ తరగతి వరకు గిరిజన పిల్లలకు వారి మాతృభాషలోనే బోధించడం వలన వారిలో సృజనాత్మకతను, కల్పనా శక్తిని అభివృద్ధిపరచటంతోపాటు, వారి మేధో వికాసానికి ఎంతగానో సహాయపడుతుంది. ఆంధ్రప్రదేశ్, తెలంగాణ రాష్ట్రాల్లోని కోయ గిరిజన పిల్లలు తరగతిలో ఇతర భాషలను సరిగ్గా చదవలేరు, ఇంకా రాయలేరు కూడా. ఎందుకంటే ఆ పిల్లలు పాఠశాలలో ప్రాథమిక అక్షరాస్యతను బహిర్గతం చేయలేరు. పిల్లలు వారి మాతృభాషలోనే చదవడం, రాయడం నేర్చుకోవడంతో పాటుగా తెలుగు, హిందీ, ఇంకా ఇంగ్లీషు భాషలను క్రమంగా చదవడం, రాయడం ఎలా నేర్చుకోగలరో ఆ అర్థవంతమైన పద్ధతిని జాతీయ పాఠ్యప్రణాళిక చట్రం-2022లో వివరంగా రాసి ఉంది. పిల్లలు మొదట చదవడం, రాయడం నేర్చుకుంటారు. అందువల్ల, ఈ కోయ భాషా వర్ణమాల పుస్తకంలో పిల్లల మాతృభాషకు తెలుగు భాషలో అన్ని అక్షరాలు, శబ్దాలు, అర్థాలకు స్థానం ఇవ్వబడింది. పిల్లల సంస్కృతి, పర్యావరణం నుంచి పదాలను సేకరించి పుస్తకంలో స్థానం కల్పించడం జరిగింది.

బహుభాషావిద్య ప్రాథమిక లక్ష్యం వారి ఇంటిభాషలో చదవడం, రాయడం ప్రారంభించడం ద్వారా రాష్ట్ర భాషలో చదవడం, రాయడంలో పిల్లల నైపుణ్యాన్ని పెంచడం. కోయ భాషకు తెలుగు భాషలో అర్థాలతో అందించబడిన ఈ పుస్తకం తెలంగాణ, ఆంధ్రప్రదేశ్‌లోని రాష్ట్ర ఉపాధ్యాయులు, అభ్యాసకుల కోసం రూపొందించడం జరిగింది. ప్రాథమిక అక్షరాస్యతకు నాలుగు ప్రధాన దశలు ఉన్నాయి. మొదటి దశలో కథలు, కథనాలు, ఇంకా చిత్రాల ద్వారా పిల్లల మేధో వికాసం జరుగుతుంది. ఆ తర్వాత భాష నేర్చుకోవడానికి పిల్లలకు వస్తువులతోపాటుగా పదాలను పరిచయం చేయడం జరుగుతుంది. ఆయా పదాలలో అమర్చబడిన అక్షరాలు కూడా గుర్తించబడతాయి. ఈ పుస్తకంలో పిల్లలు వివిధ అక్షరాలను విసంకేతించడం(డీకోడింగ్) నేర్చుకుంటారు. ఈ విసంకేతనం ద్వారా పిల్లలు శబ్దాలకూ అక్షరాలకు మధ్య సంబంధాన్ని అర్థం చేసుకోగలుగుతారు. ఈ భాషాబోధన పుస్తకాన్ని ఎలా చదవాలనే దానిపై ప్రాథమిక అంశాలు కింద ఉన్నాయి. అవి:

- **ధ్వని పరిచయం:** పిల్లలు చిత్రాన్ని చూసిన తర్వాత దాని పేరు చెబుతారు. ఉపాధ్యాయుడు ఈ చిత్రం పేరు ఏ శబ్దంతో ప్రారంభమవుతుంది? అని అడుగుతాడు. ఉదాహరణకు, '**అడవ్**' చిత్రాన్ని చూసిన తర్వాత, అది '**అ**' శబ్దంతో మొదలవుతుందని పిల్లలు గుర్తించి చెబుతారు.
- **వర్ణమాల పరిచయం:** ఉపాధ్యాయుడు మొదట పిల్లలకు '**అ**' అక్షరం ఎలా కనిపిస్తుందో చెబుతాడు. పిల్లలకు ఇచ్చిన కొన్ని పదాలలో నుండి '**అ**' అక్షరాన్ని గుర్తించమని అడుగుతాడు. పిల్లలు మూడు-నాలుగు పదాల నుండి '**అ**' అక్షరాన్ని గుర్తించి, ఆ శబ్దాన్ని ఉచ్చరిస్తారు. అలాగే '**అ**' అక్షరాన్ని రాయడం సాధన చేస్తారు.
- **పఠనం:** పిల్లలు చిత్రాలను చూసి, వాటికి వారి స్వంత భాషలో పదాలను చెబుతారు. పిల్లలు ఆ పదం మీద తమ వేలిని పెట్టి ఎడమ నుండి కుడికి కదిలిస్తూ '**అడవ్**' అని చదువుతారు. '**అ**' తో వచ్చే ఇతర పదాలను కూడా చదవడం ద్వారా పిల్లలు '**అ**'ని గుర్తించి మాట్లాడతారు. పదాది, పదమధ్యమం, పదాంతాలలో '**అ**' ఎక్కడ ఉందో చూపించి, దాని రూపాన్ని గురించి ఉపాధ్యాయుడు పిల్లలకు వివరిస్తాడు.

'**అ**' అక్షరాన్ని చదువుతున్నప్పుడు, ఉపాధ్యాయుడు '**అడవ్**' అనే పదంతో పాటు మరో మూడు-నాలుగు పదాలను కూడా బ్లాక్ బోర్డు మీద రాస్తాడు. పిల్లలను ఒక్కొక్కరిగా పిలుస్తాడు. పదాలను చదవడానికీ అక్షరాలను గుర్తించడానికి ఈ పదాలన్నింటినీ పిల్లల ప్రపంచం నుండి తీసుకోవడం జరిగింది. పుస్తకంలోని చిత్రాలను చూడటం ద్వారా పిల్లలు ఈ పదాలనుగుర్తించగలుగుతారు. ఉపాధ్యాయుడు ఒక పదాన్ని రాసి, దానిలోని ప్రతి అక్షరాన్ని విడివిడిగా చదవమని పిల్లలనుఅడిగి, అక్షరాలను చేర్చడం ద్వారా ఆ పదాన్ని చదవమని అడుగుతాడు. దీనివలన పిల్లలకు వర్ణమాల, పదాలు, శబ్దాలను కూడా పరిచయం చేయటం జరుగుతుంది. ఒక పిల్లవాడు ఒక పదాన్ని చదివినప్పుడు, ఇతర పిల్లలు అతనితోకలిసి ఆ పదాన్ని పునరావృతం చేస్తారు. దీనినే 'సామూహిక పఠనం' అని అంటారు.

- **రాయడం:** ఉపాధ్యాయులు ముందుగా పిల్లలకు '**అడవ్**' అనే పదానికి '**అ**' ని రాయడం నేర్పుతారు. ఎడమ నుండి కుడికి రాయడానికి (కలాన్ని) ఎలా కదిలించాలో ఉపాధ్యాయుడు ప్రదర్శిస్తాడు. దీనినే 'సహాయక రచన' (సపోర్టింగ్ రైటింగ్) అంటారు. ఆ తర్వాత, పుస్తకంలో ఇచ్చిన ఖాళీ స్థలంలో మిగిలిన అక్షరాలను చూసి పిల్లలు స్వయంగా '**అ**' అనే అక్షరాన్ని రాస్తారు. పిల్లలు చదివేటప్పుడు, రాసేటప్పుడు ఉపాధ్యాయుడు ఈ విషయంలో వారికి సహాయం చేస్తాడు.

పిల్లల మౌఖిక భాషాభివృద్ధి కోసం ప్రతి పాఠంలో మూడు-నాలుగు వాక్యాలతో ప్రాసగేయాలు రాసి ఉన్నాయి. ఉపాధ్యాయుడు వాటిని పాడుతూ చదవడం ద్వారా పిల్లలతో పలికిస్తారు. పాఠశాల గ్రంథాలయంలో ఉన్న పిల్లల కథల పుస్తకాన్ని చదివిన తర్వాత, ఉపాధ్యాయుడు పిల్లలభాషలో ఆ కథను చెబుతాడు. ఉపాధ్యాయుడు 1-2 తరగతుల పిల్లలకు వారి మాతృభాషలో కథలను, పాటలను చెబుతాడు. ఈ పుస్తకంలో ఇచ్చిన పదాలు అక్షరాస్యతకు ఉదాహరణలు మాత్రమే. పిల్లలకు వందల పదాలు తెలిసివుండవచ్చు కాబట్టి ఒకే అక్షర పదాన్ని అడగడం ద్వారా, పిల్లలు చాలా పదాలను పఠించగలరు (ఉదాహరణకు, '**అ**'తో ప్రారంభమయ్యే కొన్ని పదాలను ఉపాధ్యాయుడు పిల్లలతో చెప్పించాలి).

కోయ భాషను వ్రాయడానికి స్వంత లిపి లేనందున, దానిని రాయడానికి తెలుగులిపిని ఉపయోగించి ఆ లిపిలోని అక్షరాలకు అవసరమైన కొన్ని మార్పులను చేసుకొని దానిని ఉపయోగించడం జరిగింది. పిల్లల సౌలభ్యం కోసం, కోయ భాష అభివృద్ధి కోసం ఈ భాషను వ్రాయడానికి ఉపయోగిస్తున్న (తెలుగు లిపి) అక్షరాలతో కూడిన వర్ణమాల నుండి ప్రాసగేయాలు//పదాలు/అక్షరాలు ఇవ్వబడ్డాయి. ఈ కోయ భాషను నేర్చుకునేటప్పుడు, పిల్లలు వారి మాతృభాష నుండి తెలుగు శబ్దాలనూ లిపిని నేర్చుకుంటారు. ఆ తర్వాత కోయ భాషలో ఉపయోగించబడని మిగిలిన తెలుగు వర్ణమాలలోని అక్షరాలను (వేరే పట్టికగా ఇవ్వడం జరిగింది) కలిపి పూర్తి కోయ భాషాబోధన పుస్తకాన్ని అందించడం జరిగింది. ఎందుకంటే భవిష్యత్తులో విద్యార్థులు తెలుగును సులభంగా నేర్చుకోవడానికి కూడా ఇది ఉపయోగపడుతుంది.

కోయ భాషను రాయడానికి తెలుగు లిపిలోని అక్షరాలను అన్వయించి బోధించేటప్పుడు ఉపాధ్యాయులు గుర్తుంచుకోవలసిన ముఖ్యమైన అంశం: కోయ భాషలో ఉపయోగించనటువంటి తెలుగు వర్ణమాలలోని మిగిలిన అక్షరాలను (ప్రత్యేకించి మహాప్రాణ అక్షరాలు, అనునాసికాలు) అంచెల వారీగా నేర్పాలి. దానివల్ల విద్యార్థులకు తెలుగు వర్ణమాలతో పూర్తిస్థాయి అవగాహన ఏర్పడుతుంది. తదుపరి తరగతులలో వారికి తెలుగు భాషను నేర్చుకోవడం సులభం అవుతుంది.

రాష్ట్రంలోని పాఠశాలల్లో పంపిణీ చేసిన ''ఉపాధ్యాయ సహాయక కరదీపిక'' చదవడం ద్వారా మీరు ప్రాథమిక అక్షరాస్యత గురించి మరింత తెలుసుకోవచ్చు.

ఇడొపొ ఇత్త గీతాన్ ఊడేర్ సుక్కాన్ కల్పోర్ గీసాట్:

నిలువ్ గీత :

అడ్డ గీత :

తిన పక్క వాలు గీత-1:

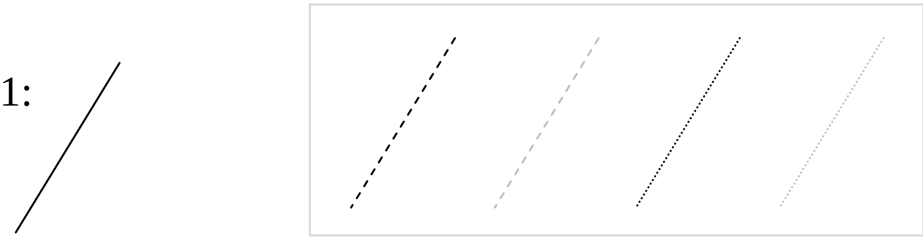

రొడ్డ పక్క వాలు గీత-2:

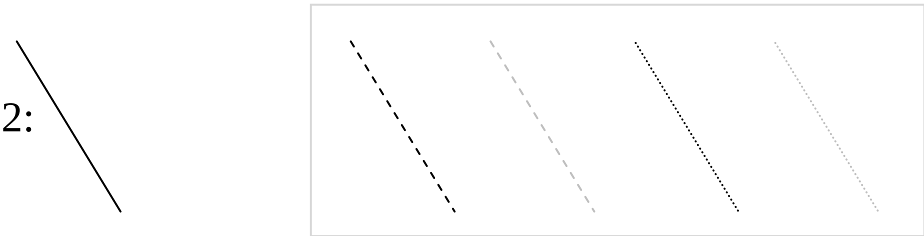

రొడ్డ పక్క వంకొ గీత-1:

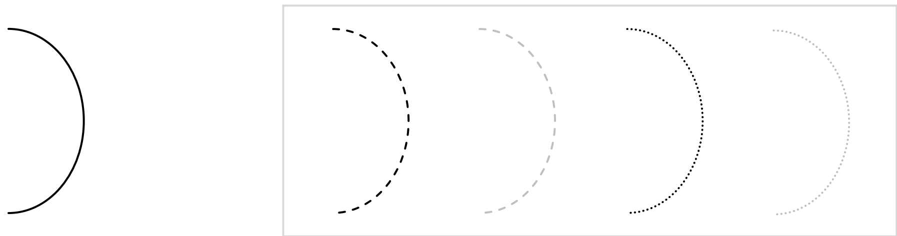

తిన పక్క వంకొ గీత-2:

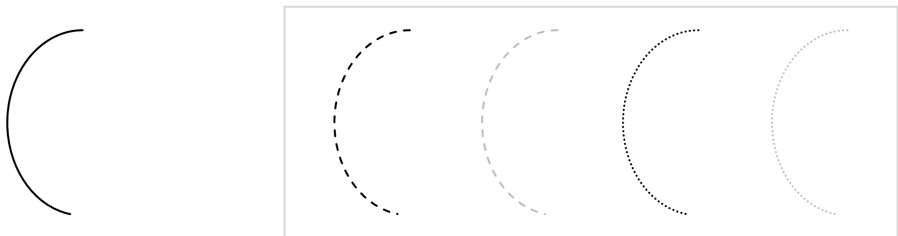

ఇలా తుంగాట్: పంతూల్ పెండ్సీల్తే గీతాన్ పొర్రొ బేలాపొయిసి, బేలా రాసోన్నోండ్ ఊడి మీరు గూడ ఆలాకే అగ్గిత్త సుక్కాన్ ఎంబాడ్ కల్పోర్ రాసవాల్.

అచరాన్ దండ

అ ఆ ఇ ఈ ఉ ఊ ఎ ఏ ఐ

ఒ ఓ అం

క గ

చ జ

ట డ ణ

త ద న

ప బ మ

య ర ల వ స

ఇడ్ప్ మందాన్ తెలుగు అచరా కోయ బాసాతె తిరియోర్:

ఋ ఔ అం అః

ఖ ఘ ఙ

ఛ ఝ ఞ

ఠ ఢ థ ధ ఫ భ

శ ష హ ళ క్ష ఱ

అ

అడవ్

అడవి

అద్దో అద్దో అడవ్
అడ్డె మందె డువ్
అద్దో అద్దో అర్రి
అర్తె దాయాన్ పెరమాం

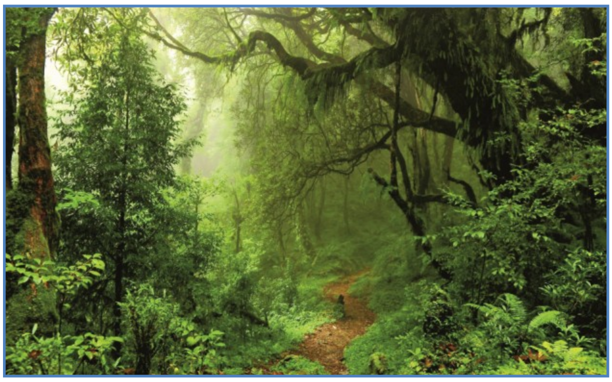

అద్దాం	అద్దం	అరియటం	నృత్యం	అర్రి	రహదారి

అ అ అ

ఆ

ఆకి

ఆకు

ఆకీన్ కుస్సిర్ ఆకిపచ్చ

ఆకీన్ పసర్ ఆకిపచ్చ

అరిటి ఆకీ ఆకిపచ్చ

ఆకీన్ రంగు ఆకిపచ్చ

ఆరీ	అరిసెలు	ఆట	ఆట	ఆమో	సామలు

ఆ ఆ ఆ

ఇ

ఇరకమార

ఇప్పచెట్టు

ఇరకమార బెర్రామంతె

ఇక్కు పుంగా గుండ్రామంతా

ఇక్కు పుయ్ తియ్యామంతె

ఇక్కు పుంగా తెల్లామంతా

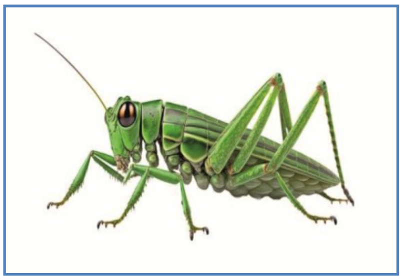

ఇసికె	ఇసుక	ఇటికె	మిడత	ఇత్తకాయ	చింతకాయ

ఇ ఇ ఇ

ఈ

ఈత పణి

ఈతపళ్ళు

ఈత పణీంక్ అడిద్కి అత్తాన్

ఈత పణీ తిందనాంకి అత్తాన్

ఈత పణీ తింజోర్ మత్తె ఒయ్

నానీ నూడి ఈత పణీ తింజోర్ మిర్తె ఒయ్

ఈత	ఈత	ఈటె	బరిసె	ఈకాడ్	చీకటి

ఈ ఈ ఈ

ఉ

ఉరపాల్

ఉడుము

ఉరపాల్ బొొస్సాతె మందె
ఉరపాల్ బుస్ బుస్ ఇంజోోందె
ఉరపాల్ గట్టింగ్ పొోయిత్తె
ఉరపాల్ నన్న వర్రోోన్ ఇత్తె

ఉలవా	ఉలవలు	ఉంజటం	నిద్ర	ఉక్కా	చుక్కలు

ఉ ఉ ఉ

ఊ

ఊసోడ్

పిల్లనగ్రోవి

ఊల వాటోంది అడప్తె నక్క

ఊసోడ్ వాటోరె నన్న వాసోందాన్

ఊల వాటోరె నానీన్ ఊడ్తె

ఊల వాటోరె జర్రు జర్రూన్ మిర్తె

ఊత	చేపలు పట్టే బుట్ట	ఊంగటం	ఊగటం	ఊదటం	ఊదటం

ఊ ఊ ఊ

ఎ

ఎడుజు

ఎలుగుబంటు

ఎలకాతె మందాన్ ఎల్లు
ఎర్వీన్ మందాన్ కీకె
అడప్తె మందాన్ ఎడుజు
దొడ్డీతె మందాన్ గొడ్క

ఎత్తేల్	చేతివల	ఎల్	ఎలుక	ఎర్వామ్	చెప్పు

ఎ ఎ ఎ

ఏ

ఏటె

పీత

ఏత్తె మందాన్ ఏటె

ఏర్రా మందాన్ ఏటె

బొ'స్సాతె మందాన్ ఏటె

నానీన్ కచ్తె ఏటె

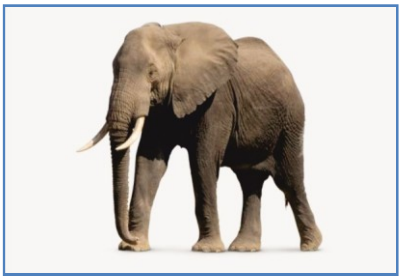

ఏనిగె	ఏనుగు	ఏతి	చేట	ఏమోల్	తాబేలు

ఏ ఏ ఏ

ఐ

ఐవూర్

ఐదుగురు

ఐదు వణుజ్కు ఒర్రలా మన్నోక్

ఐవూర్ మనుసూర్క్ ఒర్రలా మన్నోర్

ఐదు వణుజ్కు కలియుక్కు పిడికీల్

ఐవూర్ మనుసూర్క్ కలియుక్కు గట్టీబలమ్

5

ఐత్తె	పంట	ఐసు	ఐస్	ఐద్	ఐదు

ఐ ఐ ఐ

ఒ

ఒయ్

ముళ్ళపంది

ఒయ్ అడపై మిందె
ఒయ్ కొయ్యె విడస్తె
ఒయ్ మాటీ తిత్తె
ఒయ్ బొస్సాతె నీంగ్తె

ఒజ్జేల్	పొయ్యి	ఒవ్వోర్	ఉప్పు	ఒడిసేల్	ఒడిసెల

ఒ ఒ ఒ

ఓ

ఓడ

ఓడ

ఓడతె వత్తాన్ ఓ యవ్వ

ఓటు వాట్తాన్ ఓ యవ్వ

ఓడతె ధైతాన్ ఓ యవ్వ

ఓడీర్తోంటె సక్క్యామన్ ఓ యవ్వ

ఓరు	వారు	ఓమిమార	ఓమిచెట్టు	ఓటు	ఓటు

ఓ ఓ ఓ

అం

అందె

అందె

అందే వాటీ అరియోమత్కు
అందేకంతా గల్ గల్ ఇత్తా
అందోర్ ఒల్కు జల్ జల్ ఇత్తా
మామాన్ అందె కిర్ కిర్ ఇత్తె

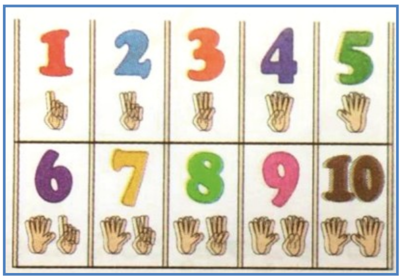

అంకే	అంకెలు	అంగూ	మాంసం	జోంజోర్	దండం

అం అం అం

క

కటూల్

మంచం

కటూల్ కటూల్ బాత కటూల్

కటూల్ కటూల్ నులక కటూల్

కటూల్ కటూల్ బేనోన్ కటూల్

కటూల్ కటూల్ దాదాన్ కటూల్

కసేర్	కొడవలి	కయ్	చెయ్యి	కండు	కన్ను

క క క

గ

గంట

గంట

గణ గణ గంట మోంగోందె
బడిద్కి వర్రాటి ఇంజోందె
గల గల వాంగు పోంగోందె
కరసనాంకి వర్రాటి ఇంజోందె

గర్బోం	గుడ్డు	గరిసె	గాదె	గలాసి	లోట

గ గ గ

చ

కంచం

కంచం

కంచంతె నిండ దోడ

కరివీన్ వత్తోండ్ గంగాల్

కాలి తుంగ్తో కంచం

కటూాల్ తర్తోండ్ గంగాల్

అ ఆ

అచరా	అక్షరాలు	పంచదార	పంచదార	కంచర్‌గాడిదె	కంచరగాడిద

చ చ చ

జ

జండ

జెండా

జండా ఎగరోంది ఎగరోంది

మూండు రంగీనద్దు

మూండు రంగీన్ జండ

మన దేసాతె జండ

జడియ	జలగ	జల్ల	పెద్దగంప	జల్లోడ్	జల్లెడ

జ జ జ

ట

టమట

టమాట

టమట సేను పచ్చా పచ్చా
టమటకాయా ఎర్రా పచ్చా
టమట పచ్చేడ్ కారం కారం
టమట పులుసు పుల్లా పుల్లా

టపకాయ	టపాకాయ	టంకుపెట్టె	ట్రంకుపెట్టె	కవతటం	నవ్వడం

ట ట ట

డ

డక్కి

డప్పు

డక్కి డక్కి డంగ్ డంగ్ డక్కి
పెల్కి మందవాల్ డంగ్ డంగ్ డక్కి
డక్కి డక్కి డంగ్ డంగ్ డక్కి
ఉసేర్ తుంగనాంకి డంగ్ డంగ్ డక్కి

డబ్బు	డబ్బులు	డంగార్	చీరకట్టు	దోడ	అన్నం

డ డ డ

ణ

తొణ

పనసతొన

తొణ తొణ పణస తొణ

తొణ తొణ తియ్యాట్ తొణ

తొణ తొణ దబ్బ తొణ

తొణ తొణ పుల్లాట్ తొణ

అణకటం	దాక్కోవడం	బొణగ	బొనుగు	కొణమాం	కణుజు

ణ ణ ణ

త

తడికె

తడిక

తడికె తడికె పెదుర్ తడికె
తడికేతె పొర్రొ వత్తూర్ కీకే
కా కా ఇంజో కాకాడ్ వత్తె
తడికేత్ కీకేన్ కొట్టీ తిత్తె

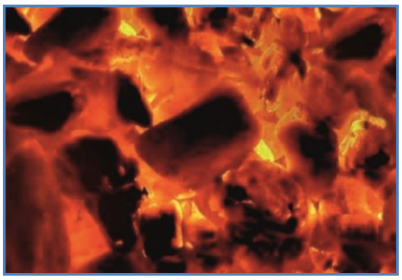

తడిమి	నిప్పు	తంగోడ్	తంగేడు	తరగాత్	తరగతి

త త త

ద

దండ

దండ

దండ పుంగాన్ దండ

మెల్లె పుంగాన్ దండ

బంతి పుంగాన్ దండ

ఈ దండ నీకు ఆ దండ నాకు

దంతె	గొర్రు	దండేం	దండెం	దడి	దడి

ద ద ద

న

నయ్

కుక్క

నయిదె తోక వంకోర్
నక్కేర్ పణీ వగ్గోర్
జిన్న పణీ నల్లాంగ్
నక్క బుద్ధి వింకోర్

నత్తెగుల్ల	నత్త	నయ్‌తార్సు	త్రాచుపాము	నక్కేర్‌పండీ	నక్కెరుపండ్లు

న న న

ప

పడియ

పేలదువ్వెన

పలకార్ తుంగి ఏర్వ్యాంది
పడియాతె తలకాయ్ దుస్సీ
పలక పొయిసి బడిద్కి అన్
పలకాతె పొర్రొ బొమ్మ్మ గీస

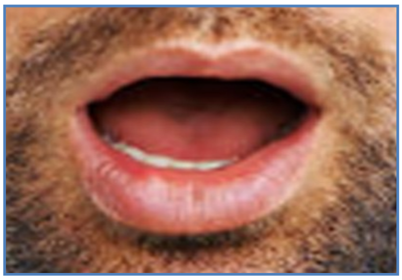

పద్ది	పంది	పవ్వూర్	నోరు	పరిగిపండి	పరికెపండ్లు

ప ప ప

బ

బలగ

తాటికమ్మ

బలగ పొయిసి వర్రా తమ్మా
బలగ బండి తుంగ్యాట్ తమ్మా
బండీతె బడిద్కి దక్యాట్ తమ్మా
బడిదె కర్సోరె సదవక్యాట్ తమ్మా

బక్కా	బక్క ఆవు	బక్కార్	జిగురు	బడి	పాఠశాల

బ బ బ

మ

మల్లు

నెమలి

మల్లి మల్దీన్ ఊడి

మల్దె దిస్తె అరియోంది

మల్లు గిర గిర ఉడ్డోంది

మల్లి గిర గిర ఉడ్డోరె కవసోంది

మరకపండి	మామిడిపండు	మల్లెపుంగార్	మల్లెపువ్వు	మండూల్	మట్టి

మ మ మ

య

యవ్వ

అమ్మ

యవ్వ ఇత్కు నాకిట్టం

యవ్వ ఇల్లూక్ నన్నిల్లాన్

యవ్వె లోత్కి ఎలుతూర్

యవ్వె లోకాత్కి దేవార్

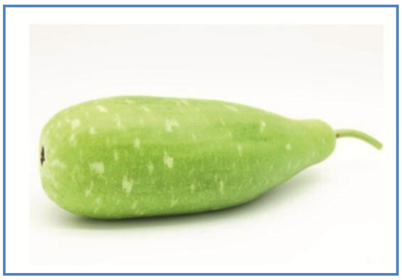

ఊయల్	ఊయల	కాకేర్కాయ	కాకరకాయ	బురక్కాయ	ఆనపకాయ

య	య	య	

ర

రంగూ

రంగులు

రంగు రంగీన్ విల్లి

ఏడు రంగీన్ సింగిర్ విల్లి

వాన వత్క్ వాతె విల్లి

రంగు రంగీన్ సింగిర్ విల్లి

రంబో	రామచిలుక	రయికె	రవిక	రంగీన్‌గూగె	సీతాకోకచిలుక

ర ర ర

ల

లడ్డు

లడ్డు

లడ్డు లడ్డు బేలోటె లడ్డు

లడ్డు లడ్డు రవ్వ లడ్డు

లచ్చాల్ తత్తో తియ్యాట్ లడ్డు

లచ్చి తిత్తె రవ్వ లడ్డు

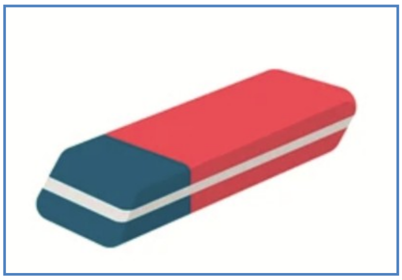

లబ్బ	అరచేయి	లబ్బార్	రబ్బరు	బూల	ఎముక

ల ల ల

వ

వర్సె

ఉడత

వంజీన్ సేంగ వర్సె వత్కాట్
వర్సేన్ సేంగ నన్న వత్తాన్
వంజీకన్ని వర్సే తిత్కాట్
సేన్దీనూడి వల వల కేయిత్తాన్

వల్ల	వల	వంజీ	వడ్లు	సదవటం	చదవటం

వ వ వ

స

సంత

సంత

సంత సంత సింతూర్ సంత

సంత సంత తుమ్మిరి పణీన్ సంత

సంత సంత దొరమరక సంత

సంత సంత అడ్డాకీన్ సంత

సమూర్కాకాడ్	చమురుకాకి	సవడా	చవడచేప	కిరసమాటి	అడవిదుంపలు

స స స

గుణింతా

అచ్చు	గుణింతచరా	ఉజ్జాంప్‌త్కి	ఉజ్జాంప్‌త్కి
అ		కనిక 	మత్తు
ఆ	◌ా	కాకాడ్ 	జాండూం
ఇ	◌ి	పిసికె 	కిక్యాల్
ఈ	◌ీ	కీకె 	జీడిపండి

అచ్కు	గుణింతచరా	ఉజ్జాంప్‌త్కి	ఉజ్జాంప్‌త్కి
ఉ	◌ు	లుప్పి	డువ్
ఊ	◌ూ	గూపొ	మూంజు
		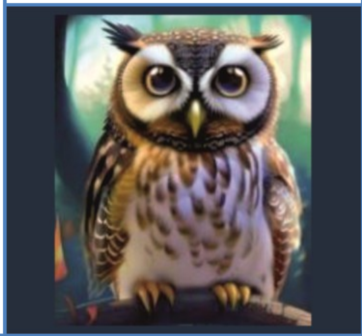	
ఎ	◌ె	కెరియాడ్	వెరకాడ్
		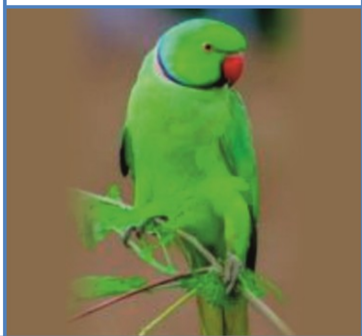	
ఏ	◌ే	పేకాల్	రేంగపండి

అచ్కు	గుణింతచరా	ఉజ్జాంప్‌త్కి	ఉజ్జాంప్‌త్కి
ఐ	◌ై	బైకె 	కైక్కు
ఒ	◌ొ	కొర్రు 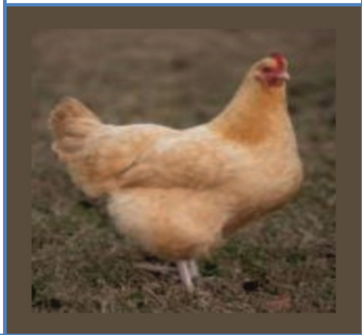	పొడుదు
ఓ	◌ో	కోపె 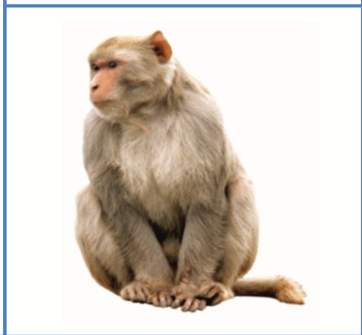	డోలి 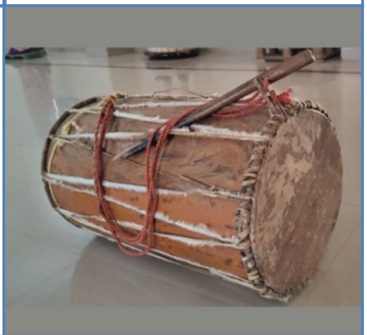
అం	◌ం	సింబం 	నాంగేల్

అంకే			
1	ఒర్రోట్	ఒకటి	
2	రొండు	రెండు	
3	మూండు	మూడు	
4	నాలు	నాలుగు	
5	ఐద్	ఐదు	
6	ఆర్	ఆరు	
7	ఏడ్	ఏడు	
8	ఎనిమిద్	ఎనిమిది	
9	తొమ్మిద్	తొమ్మిది	
10	పది	పది	
11	పదకొండ్	పదకొండు	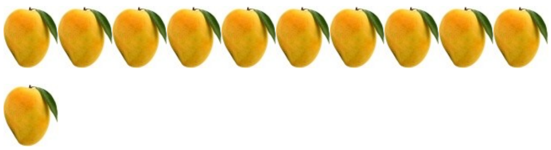

12	పన్నెండ్	పన్నెండు	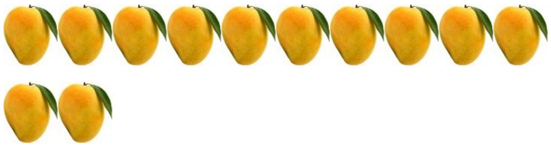
13	పదమూండ్	పదమూడు	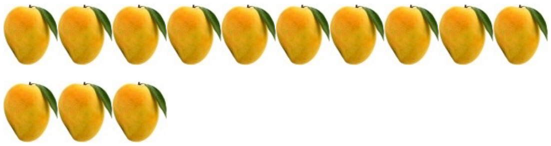
14	పద్నాల్	పధ్నాలుగు	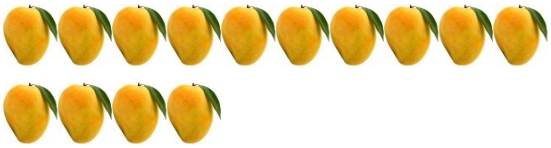
15	పదేను	పదిహేను	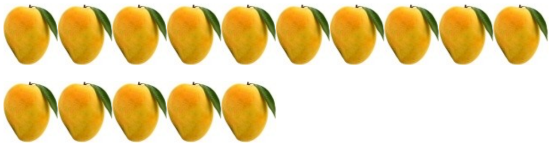
16	పదారు	పదహారు	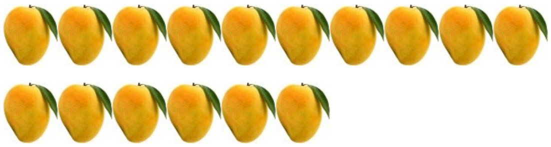
17	పదేడు	పదిహేడు	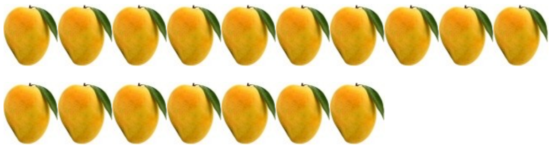
18	పద్దెనిమిద్	పద్దెనిమిది	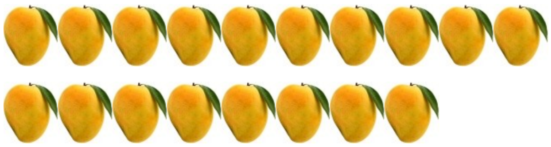
19	పంతొమ్మిద్	పంతొమ్మిది	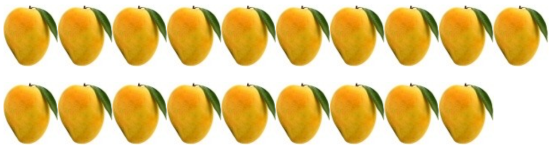
20	ఇరవై	ఇరవై	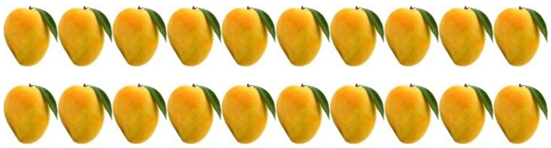

1	1	1	1	
2	2	2	2	
3	3	3	3	
4	4	4	4	
5	5	5	5	
6	6	6	6	
7	7	7	7	
8	8	8	8	
9	9	9	9	
10	10	10	10	

11	11	11	11	
12	12	12	12	
13	13	13	13	
14	14	14	14	
15	15	15	15	
16	16	16	16	
17	17	17	17	
18	18	18	18	
19	19	19	19	
20	20	20	20	

తెలుగు వర్ణమాల

అచ్చులు

అ ఆ ఇ ఈ ఉ ఊ ఋ ఎ ఏ ఐ

ఒ ఓ ఔ అం అఁ అః

హల్లులు

క ఖ గ ఘ ఙ

చ ఛ జ ఝ ఞ

ట ఠ డ ఢ ణ

త థ ద ధ న

ప ఫ బ భ మ

య ర ల వ శ ష స హ ళ క్ష ఱ

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

1. Install ePathshala Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

1. Select preferred language
2. Choose your role: Student or Teacher
3. Grant access and allow app permissions
4. Tap to scan the QR code
5. Focus camera on the QR code in textbook
6. Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT (Phase-1)

SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages
1	ASSAMESE
2	BENGALI
3	BODO
4	DOGRI
5	GUJARATI
6	HINDI
7	KANNADA
8	KASHMIRI

Sl. No.	Languages
9	KONKANI
10	MAITHILI
11	MALAYALAM
12	MANIPURI
13	MARATHI
14	NEPALI
15	ODIA
16	PUNJABI

Sl. No.	Languages
17	SANSKRIT
18	SANTALI
19	SINDHI
20	TAMIL
21	TELUGU
22	URDU

NON - SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages
1	ADI
2	ANAL
3	ANGAMI
4	AO
5	BHILI (VASAVA)
6	BHUTIA
7	BISHNUPRIYA MANIPURI
8	DEORI
9	DIMASA
10	GADABA (GUTOB)
11	GARO
12	HALBI
13	HMAR
14	JATAPU (KUVI)
15	JUANG
16	KABUI
17	KARBI
18	KHANDESHI
19	KHARIA

Sl. No.	Languages
20	KINNAURI
21	KISAN (KUNHU)
22	KODAVA
23	KOKBOROK
24	KOLAMI
25	KONDA
26	KORKU
27	KORWA
28	KOYA
29	KUI
30	KUKI
31	KURUKH
32	KUZHALE (KHEZHA)
33	LEPCHA
34	LIANGMAI
35	LIMBU
36	LOTHA
37	MAO
38	MISHMI (IDU)

Sl. No.	Languages
39	MISING
40	MIZO
41	MOGH
42	MUNDARI
43	NYISHI (NISSI)
44	RABHA
45	RAI
46	SHERPA
47	SAVARA (SORA)
48	SÜMI (SEMA)
49	TAMANG
50	TANGKHUL
51	TANGSA
52	TIWA (LALUNG)
53	TULU
54	WANCHO

भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)

Manasagangotri, Mysuru - 570 006

0821 2515820 (Director) / ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg

New Delhi - 110016

011 2696 2580 / dceta.ncert@nic.in